आर्थिक सुधार

सामान्यत: आर्थिक सुधार का तात्पर्य आर्थिक प्रक्रियाओं के सरलीकरण से है।

* प्रथम चरण के सुधार :- 1991 ई० में आरंभ किए गए ऐसे सुधार की मूल प्रकृति संरचनात्मक थी जिसका मुख्य उद्देश्य उद्योगों के माध्यम से भारतीय अर्थव्यवस्था का संधारणीय विकास सुनिश्चित करना था। इस क्रम में सर्वप्रथम औद्योगिक लाइसेंस नीति का सरलीकरण कर औद्योगिक विनियमन को आधार प्रदान किया गया है। इसके अतिरिक्त उद्योगों में विदेशी निवेश सुनिश्चित करने के प्रयास भी किये गए। आयात शुल्कों में कमी तथा चरणबद्ध रूप से मात्रात्मक प्रतिबंधों की समाप्ति इस चरण के सुधारों में अत्यंत महत्वपूर्ण थे। लेकिन ऐसे सुधारों के बावजूद भारत का लघु औद्योगिक क्षेत्र लाभान्वित नहीं हो पाया।

प्रथम चरण के सुधारों में भारतीय अर्थव्यवस्था को अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए खोलना महत्वपूर्ण था। इससे भारतीय उद्योगों को राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर प्रतिस्पर्धी बनाने में सहायता मिली। मुक्त अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का लाभ लेने के लिए विनिवेश तथा निजीकरण जैसी प्रक्रियाओं पर अत्यधिक बल दिया गया था जो वर्तमान में भी जारी है।

कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से मूल्य आधारित विभिन्न फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (छोटे और सीमान्त किसानों के लिए) तथा अधिग्रहण मूल्य (बड़े किसानों के रूप बदलकर) के माध्यम से प्रयास किए गए।

बैंकों को कार्यात्मक स्वायत्तता देना भी प्रथम चरण के सुधारों का एक महत्वपूर्ण आयाम था। इसी प्रकार सेवा क्षेत्र तथा आधारभूत संरचना के क्षेत्र में भी किए जाने वाले सुधारों के क्रम में निजी क्षेत्र की भूमिका के विस्तार पर बल दिया गया था। आधारभूत संरचना क्षेत्र में विशेषकर सड़क रेलवे बंदरगाह तथा दूरसंचार में व्यापक सुधार किए गए।

★ द्वितीय चरण के सुधार :— संरचनात्मक सुधारों की निरंतरता बनाये रखते हुए द्वितीय चरण में वित्तीय सुधारों को भी सम्मिलित किया गया था। इसके अन्तर्गत विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) तथा संविभाग निवेश (Portfolio Investments = शेयर डिबेंचर) की वृद्धि पर सर्वाधिक बल दिया गया।

भारत के राजकोषीय प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने के लिए राज्य स्तरीय राजकोषीय सुधार भी किये गए थे।

(MTFRRP = mid Term Fiscal Reform Programme)
मध्यावधि राजकोषीय सुधार कार्यक्रम

द्वितीय चरण के सुधारों का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह था कि इसमें

बैंकों में जोखिम प्रबंधन (Risk Management) के लिए नई प्रणालियों के विकास पर बल दिया गया था। इन प्रणालियों के माध्यम से बैंकों में कोष हस्तांतरण (Fund Transfer) को सुदृढ़ बनाने का प्रयास किया गया।

(RTGS : Real Time Gross settlement)
वास्तविक समय निपटान प्रणाली

*** तृतीय चरण के सुधार — इन सुधारों का मुख्य उद्देश्य श्रम बाजार के ~~सुविधाओं~~ सुधारों पर था ताकि बेहतर श्रम प्रबंधन संबंध स्थापित कर औद्योगिक उत्पादन सुनिश्चित किया जा सके। इसी उद्देश्य से 1926 के श्रम विधानों में संशोधन भी प्रस्तावित है। उल्लेखनीय है कि तृतीय चरण के सुधारों का उद्देश्य भारत की विधि प्रणाली में सकारात्मक परिवर्तन कर संरचनात्मक सुधारों को समर्थन प्रदान करना है। इसके अतिरिक्त इस चरण में शिक्षा तथा स्वास्थ्य जैसी सामाजिक आधारसंरचनाओं के निर्माण तथा विकास पर भी बल दिया गया है।